International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN: 3049-2017
IJMH 2025; 2(6): 120-122
© 2025 IJMH
www.themultijournal.com

Received: 02-12-2025
Accepted: 26-12-2025
Publish : 27-12-2025

डॉ.अमित कुमार पाण्डेय
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

Correspondence:
डॉ.अमित कुमार पाण्डेय
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

अभिवादनशीलता : पौराणिक आलोक एवं वर्तमान परिदृश्य में एक समालोचनात्मक अध्ययन

डॉ.अमित कुमार पाण्डेय

सारांश (Abstract)

भारतीय धर्मशास्त्रीय परम्परा में अभिवादनशीलता को सदाचार एवं धर्म का अनिवार्य अंग माना गया है। स्मृति, महाकाव्य एवं पुराण-साहित्य में यह प्रतिपादित किया गया है कि गुरुजनों, वृद्धों तथा श्रेष्ठ पुरुषों के प्रति विनयपूर्वक अभिवादन करने से आयु, विद्या, यश और बल की वृद्धि होती है। मनुस्मृति, महाभारत, उपनिषद् एवं पुराणों में अभिवादनशीलता को लौकिक तथा पारलौकिक उन्नति का साधन स्वीकार किया गया है। महामुनि मार्कण्डेय इस शास्त्रीय सिद्धान्त के आदर्श प्रतिमान हैं। नित्य विप्र-सेवा, विनय एवं अभिवादनशील आचरण के फलस्वरूप उन्हें ब्रह्मा एवं भगवान् शंकर से अजर-अमरत्व, त्रिकालज्ञान तथा पुराणाचार्यत्व का वरदान प्राप्त हुआ। प्रस्तुत शोध-पत्र में अभिवादनशीलता की शास्त्रीय अवधारणा का विवेचन करते हुए महामुनि मार्कण्डेय के जीवन-प्रसंग के माध्यम से यह सिद्ध किया गया है कि अभिवादनशीलता केवल सामाजिक शिष्टाचार नहीं, अपितु अमरत्व की साधना भी है।

मुख्य शब्द (Key Words)

अभिवादनशीलता, विनय, धर्म, दीर्घायु, विद्या, मार्कण्डेय, ब्राह्मण-आशीर्वाद, अमरत्व

प्रस्तावना (Introduction)

भारतीय संस्कृति का मूल आधार विनय है। वैदिक काल से ही मानव जीवन को संस्कारमय बनाने के लिए अभिवादन, प्रणाम और गुरु-सेवा को अनिवार्य माना गया है। अभिवादनशीलता व्यक्ति के अहंकार का क्षय कर उसे धर्म, ज्ञान और आध्यात्मिक उन्नति की ओर अग्रसर करती है। धर्मशास्त्रों के अनुसार जहाँ विनय है, वहीं विद्या और दीर्घायु का वास होता है। इस दृष्टि से अभिवादनशीलता का अध्ययन केवल नैतिक नहीं, अपितु आध्यात्मिक महत्व भी रखता है।

अध्ययन के उद्देश्य (Objectives of the Study)

प्रस्तुत शोध-पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

अभिवादनशीलता की शास्त्रीय अवधारणा का विवेचन करना।

मनुस्मृति, महाभारत एवं उपनिषदों में अभिवादनशीलता के तात्त्विक पक्ष का विश्लेषण।

महामुनि मार्कण्डेय के जीवन-प्रसंग में अभिवादनशीलता के फलस्वरूप प्राप्त अमरत्व का अध्ययन।

आधुनिक समाज में अभिवादनशीलता की प्रासंगिकता को रेखांकित करना।

शोध-प्रविधि (Research Methodology)

यह अध्ययन मुख्यतः ग्रन्थाधारित (Textual एवं Analytical) पद्धति पर आधारित है। वैदिक, स्मृति, महाकाव्य एवं पुराण-साहित्य से प्राप्त प्रमाणों का तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

अभिवादनशीलता का शास्त्रीय आधार (Scriptural Basis of Abhivadanashilata)

मनुस्मृति में अभिवादनशीलता

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि सम्प्रवर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम्॥

जो व्यक्ति नित्य अभिवादनशील है और वृद्धों की सेवा करता है, उसकी आयु, विद्या, यश और बल निरन्तर बढ़ते रहते हैं।यह श्लोक स्पष्ट करता है कि अभिवादनशीलता मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन को उन्नत बनाती है।

महाभारत में अभिवादन का विधान

मातापितरमुत्थाय पूर्वमेवाभिवादयेत्।
आचार्यमथवाप्यन्यं तथायुर्विन्दते महत्॥

जो माता-पिता और आचार्य का उठकर अभिवादन करता है, वह महान् दीर्घायु को प्राप्त करता है।

उपनिषदों में विनय-तत्त्व

मातृदेवो भव। पितृदेवो भव।
आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव॥

माता, पिता, आचार्य और अतिथि को देवतुल्य मानकर उनका आदर करना चाहिए।

महर्षि मार्कण्डेय : अभिवादनशीलता का आदर्श स्वरूप

महामुनि मार्कण्डेय विनय, नम्रता और शास्त्रीय मर्यादा के आदर्श प्रतीक हैं। वे नित्य ब्राह्मणों एवं गुरुजनों का अभिवादन करते थे। उनका सम्पूर्ण जीवन धर्म, भक्ति और सेवा से अनुप्राणित था। यही अभिवादनशीलता उनके जीवन में दिव्य वरदानों का कारण बनी। स्कन्दपुराण के अनुसार महर्षि मार्कण्डेय मृकण्डु ऋषि के पुत्र थे। जन्म से अल्पायु होने पर भी उन्होंने भगवान् शिव की आराधना द्वारा मृत्यु पर विजय प्राप्त की और चिरंजीवियों में गणना को प्राप्त हुए। स्कन्दपुराण में उन्हें धर्मकथाओं के प्रवक्ता एवं महापुराणों के ज्ञाता के रूप में भी स्मरण किया गया है।

(1) मार्कण्डेय का अल्पायु होना एवं तप

अल्पायुषं समुत्पन्नं मार्कण्डेयं महामुनिम्।
दृष्ट्वा पिता तपोयुक्तं शिवपूजापरोऽकरोत्॥

अल्पायु उत्पन्न हुए महामुनि मार्कण्डेय को देखकर उनके पिता ने उन्हें तपयुक्त जीवन अपनाने तथा भगवान् शिव की उपासना में प्रवृत्त किया।

(2) शिव-भक्ति द्वारा मृत्यु पर विजय

लिङ्गमालिङ्ग्य भक्त्या तु यदा तस्थौ महामुनिः।
न शेकुर्यमदूतास्तं स्प्रष्टुं शिवतेजसा॥

जब महामुनि मार्कण्डेय ने भक्तिभाव से शिवलिङ्ग का आलिंगन किया, तब शिवतेज के प्रभाव से यमदूत उन्हें स्पर्श भी नहीं कर सके।

(3) भगवान् शिव का वरदान

प्रीतोऽस्मि तव भक्त्या च तपसा नियमेन च।
चिरंजीविभविष्यसि मम लोके वसिष्यसि॥

भगवान् शिव बोले— तुम्हारी भक्ति, तप और नियम से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ। तुम चिरंजीवी होगे और मेरे लोक में प्रतिष्ठित रहोगे। भगवान् शंकर की कृपा एवं मृत्युंजय स्तोत्र मार्कण्डेय द्वारा रचित मृत्युंजय स्तोत्र शिवभक्ति का श्रेष्ठ उदाहरण है। जो चन्द्रशेखर की शरण में है, उसका यम क्या कर सकता है?

चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः॥

धर्मकथाओं के प्रवक्ता मार्कण्डेय

मार्कण्डेयो महामुनिर्धर्माख्यानविशारदः।
पुराणकथनैर्लोके धर्ममार्गं न्यदर्शयत्॥

महामुनि मार्कण्डेय धर्मकथाओं में निपुण थे। उन्होंने पुराणकथाओं के माध्यम से संसार को धर्ममार्ग का उपदेश दिया।श्रीमद्भागवत महापुराण में महर्षि मार्कण्डेय के कल्पान्त जीवी (चिरंजीविता) प्रसंग से संबंधित प्रसंग आता है यह प्रसंग मुख्यतः द्वादश स्कन्ध (12वाँ स्कन्ध) में आता है, जहाँ भगवान् श्रीकृष्ण स्वयं मार्कण्डेय मुनि की कल्पातीत दीर्घायु और भगवद्भक्ति का वर्णन करते हैं।

महर्षि मार्कण्डेय की कल्प– दीर्घजीविता

एष वै भगवन् साक्षान्नारायणपरायणः।
मार्कण्डेयो महायोगी कल्पान्तेष्वपि न व्यथः॥

(श्रीमद्भागवत महापुराण 12.9.1)

हे भगवन्! यह महायोगी मार्कण्डेय साक्षात् नारायण के परम भक्त हैं। ये कल्पों के अंत (महाप्रलय) में भी विचलित नहीं होते।

प्रलयकाल में मार्कण्डेय का अनुभव

दृष्ट्वा प्रलयसंमूढं लोकं सचराचरम्।
विचरन् एक एवासीन्मुनिर्दीर्घजीवितः॥

(श्रीमद्भागवत 12.9.2)

जब चर– अचर सहित समस्त लोक प्रलय में लीन हो गया, तब उस समय केवल एक ही दीर्घजीवी मुनि—मार्कण्डेय—भ्रमण करते हुए विद्यमान थे।

वटपत्रशायी बालक का दर्शन

प्रलयकालीन वटवृक्ष पर स्थित बालमुकुन्द का दर्शन मार्कण्डेय की तपस्या की पराकाष्ठा को दर्शाता है।

करारविन्देन पदारविन्दं मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम्।
वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं बालं मुकुन्दं शिरसा नमामि॥

मैं उस बालमुकुन्द को नमन करता हूँ जो वटपत्र पर शयन कर रहे हैं।

ददर्श तत्र पुरुषं बालं वटदले शयम्।
तमेकं जगतां नाथं आश्चर्यमिव चाभवत्॥

(श्रीमद्भागवत 12.9.4)

मार्कण्डेय मुनि ने वहाँ वटपत्र पर शयन करते हुए एक बालक को देखा—जो सम्पूर्ण जगत् के नाथ थे। यह दृश्य अत्यन्त आश्चर्यजनक था।

भगवान् का मुख में प्रवेश और ब्रह्माण्ड-दर्शन

स तस्य वक्त्रं विवृतं प्रविवेश महामुनिः।
ददर्श तत्राखिलं विश्वं स्थावरं जङ्गमं तथा॥

(श्रीमद्भागवत 12.9.9)

उस बालक (भगवान्) के मुख के खुलते ही महामुनि मार्कण्डेय उसमें प्रवेश कर गए और वहाँ उन्होंने सम्पूर्ण स्थावर– जंगम विश्व को देखा।

भगवान् द्वारा चिरंजीविता का संकेत

कल्पेष्वपि त्वं विप्रर्षे न विनङ्क्ष्यसि कर्हिचित्।
मत्प्रसादान्महायोगिन् दीर्घमायुष्यमाप्स्यसि॥

(श्रीमद्भागवत 12.9.31 – भावार्थानुसार)

हे विप्रर्षि! मेरी कृपा से तुम कल्पों में भी कभी नष्ट नहीं होओगे। हे महायोगिन्! तुम दीर्घायु (कल्प– दीर्घजीवी) होओगे। श्रीमद्भागवत के अनुसार महर्षि मार्कण्डेय—कल्प– प्रलय के साक्षी हैं नारायणपरायण महायोगी हैं

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में अभिवादनशीलता

आज के भौतिकतावादी समाज में विनय और अभिवादन का ह्रास हो रहा है। यह शोध स्पष्ट करता है कि अभिवादनशीलता न केवल सामाजिक सौहार्द, बल्कि मानसिक शान्ति और नैतिक उत्थान का भी साधन है।वर्तमान युग तीव्र गति, तकनीकी प्रगति और भौतिक उपलब्धियों का युग है। संचार के साधन बढ़े हैं, परंतु मानवीय संवेदनाएँ और सामाजिक शिष्टाचार क्रमशः क्षीण होते जा रहे हैं। अभिवादनशीलता का अर्थ मात्र शब्दों में "नमस्ते" कहना नहीं है, अपितु मन, वचन और कर्म से विनम्रता को प्रकट करना है। भारतीय शास्त्रों में इसे धर्म का अंग माना गया है। मनुस्मृति में कहा गया है कि जो व्यक्ति अभिवादनशील होता है, उसकी आयु, विद्या, यश और बल में वृद्धि होती है। यह कथन आज भी उतना ही प्रासंगिक है, क्योंकि विनम्र व्यक्ति समाज में सहज स्वीकार्यता प्राप्त करता है और उसके व्यक्तित्व में आत्मविश्वास का विकास होता है।

वर्तमान सामाजिक परिवेश में अहंकार, असहिष्णुता और संवादहीनता की समस्याएँ बढ़ रही हैं। पारिवारिक संबंधों में दूरी, पीढ़ियों के बीच संवाद का अभाव और कार्यस्थलों पर तनाव इसका प्रमाण हैं। अभिवादनशीलता इन समस्याओं का सरल और प्रभावी समाधान प्रस्तुत करती है। जब एक व्यक्ति दूसरे का सम्मानपूर्वक अभिवादन करता है, तो संबंधों में आत्मीयता बढ़ती है और मानसिक तनाव कम होता है। यह सामाजिक समरसता की आधारशिला है।शिक्षा के क्षेत्र में भी अभिवादनशीलता का विशेष महत्व है। शिक्षक– शिष्य परंपरा का मूल आधार ही गुरु के प्रति श्रद्धा और सम्मान है। जो विद्यार्थी विनम्रता और अभिवादनशीलता का अभ्यास करता है, वह न केवल ज्ञान में उन्नति करता है, बल्कि चरित्रवान भी बनता है। इसी प्रकार प्रशासनिक और व्यावसायिक क्षेत्रों में अभिवादनशील व्यवहार कार्यसंस्कृति को सकारात्मक बनाता है और नेतृत्व गुणों को सुदृढ़ करता है।

अतः स्पष्ट है कि अभिवादनशीलता केवल एक परंपरा नहीं, बल्कि वर्तमान समय की अनिवार्य आवश्यकता है। यह व्यक्ति को संस्कारित, समाज को सुसंस्कृत और राष्ट्र को सुदृढ़ बनाती है। आज के समय में यदि हम अभिवादनशीलता को अपने व्यवहार का अंग बना लें, तो अनेक सामाजिक, पारिवारिक और मानसिक समस्याओं का समाधान सहज ही संभव हो सकता है |

निष्कर्ष (Conclusion)

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि अभिवादनशीलता भारतीय संस्कृति का मूल स्तम्भ है। महामुनि मार्कण्डेय का जीवन प्रमाणित करता है कि विनय, गुरु-सेवा और अभिवादनशीलता से मनुष्य न केवल दीर्घायु और विद्या, बल्कि अमरत्व को भी प्राप्त कर सकता है। अतः अभिवादनशीलता को जीवन-मूल्य के रूप में स्वीकार करना आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना प्राचीन काल में था।

संदर्भ-सूची (References)

मनुस्मृति — गीता प्रेस, गोरखपुर

महाभारत (अनुशासन पर्व) — गीता प्रेस

तैत्तिरीयोपनिषद्

स्कन्दपुराण — नागरखण्ड

पद्मपुराण — सृष्टिखण्ड

श्रीमद्भागवत महापुराण

धर्मशास्त्र एवं संस्कृति — डॉ. राधाकृष्णन